गिग इकोनॉमी और युवाओं की बदलती कार्य संस्कृति: (अम्बेडकरनगर जिले के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. शिप्रा सिंह

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बी. एन. के. बी. पी. जी. कॉलेज, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: डॉ. शिप्रा सिंह

Received 11 March 2026; Accepted 23 Apr 2026; Published 5 May 2026

DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.2.81-87

सारांश

इक्कीसवीं सदी में डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन भुगतान तथा डिजिटल प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने रोजगार और श्रम की पारंपरिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इसी परिवर्तन की अभिव्यक्ति के रूप में 'गिग इकोनॉमी' सामने आई है, जिसमें व्यक्ति पारंपरिक स्थायी नियोक्ता-कर्मचारी संबंध के स्थान पर कार्य, परियोजना, सेवा अथवा मांग-आधारित गतिविधियों के माध्यम से आय अर्जित करता है। नीति आयोग की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार 2020–21 में भारत में लगभग 77 लाख गिग श्रमिक थे, जो कुल कार्यबल का लगभग 1.5 प्रतिशत तथा गैर-कृषि कार्यबल का लगभग 2.6 प्रतिशत थे। 2029–30 तक इनके लगभग 2.35 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान लगाया गया था (NITI Aayog, 2022)।

गिग अर्थव्यवस्था का प्रभाव केवल रोजगार के अवसरों तक सीमित नहीं है। यह युवाओं के समय-बोध, श्रम-अनुशासन, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक संबंधों, लैंगिक भूमिकाओं, कौशल, सामाजिक गतिशीलता और रोजगार संबंधी आकांक्षाओं को भी प्रभावित कर रही है। विशेष रूप से डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित श्रम में औपचारिक स्वतंत्रता और वास्तविक नियंत्रण के बीच तनाव दिखाई देता है। भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों ने आय-अनिश्चितता, श्रम-असुरक्षा तथा एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण जैसी समस्याओं को रेखांकित किया है (Nair, 2023)।

अम्बेडकरनगर जैसे जिले में इस विषय का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ कृषि तथा पारंपरिक पावरलूम अर्थव्यवस्था के साथ व्यापार, छोटे उद्योग, शिक्षा, सेवा और धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी मौजूद हैं। स्थानीय युवाओं के डिजिटल कौशल के माध्यम से पारंपरिक आर्थिक गतिविधियों को डिजिटल बाजार से जोड़ने की संभावनाएँ विकसित हो सकती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन कार्ल मार्क्स के श्रम एवं पूँजी संबंध, मैक्स वेबर के तर्कसंगठन, गाइ स्टैंडिंग के 'प्रिकैरियट', पियरे बॉर्दियो की पूँजी की अवधारणा तथा समकालीन साहित्य में विकसित एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण की अवधारणा को सैद्धांतिक आधार बनाता है। अध्ययन का केंद्रीय तर्क है कि गिग अर्थव्यवस्था युवाओं के लिए रोजगार, अतिरिक्त आय, कौशल विकास, कार्य-लचीलापन और डिजिटल उद्यमिता के अवसर पैदा करती है, लेकिन आय की अनिश्चितता, डिजिटल असमानता, सामाजिक सुरक्षा की कमी तथा प्लेटफॉर्म-आधारित नियंत्रण श्रम-असुरक्षा के नए रूप भी उत्पन्न कर सकते हैं।

मुख्य शब्द: गिग इकोनॉमी, प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था, युवा, कार्य संस्कृति, डिजिटल श्रम, डिजिटल असमानता, सामाजिक सुरक्षा, अम्बेडकरनगर, डिजिटल उद्यमिता।

प्रस्तावना

समाजशास्त्रीय दृष्टि से कार्य केवल आय अर्जित करने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की सामाजिक पहचान, प्रतिष्ठा, पारिवारिक स्थिति, जीवन-शैली और सामाजिक संबंधों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। औद्योगिक समाज में रोजगार की पारंपरिक व्यवस्था निश्चित कार्यस्थल, निर्धारित कार्य-समय, नियमित वेतन और स्पष्ट नियोक्ता-कर्मचारी संबंध पर आधारित रही है। किंतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने कार्य के संगठन, श्रम-नियंत्रण और रोजगार संबंधों को नए रूप प्रदान किए हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने ऐसी कार्य-व्यवस्था को जन्म दिया है जिसमें व्यक्ति किसी एक संस्था का स्थायी कर्मचारी बने बिना अलग-अलग ग्राहकों, कंपनियों या प्लेटफॉर्मों के लिए कार्य कर सकता है। ऑनलाइन ट्यूशन, फ्रीलांसिंग, डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट निर्माण, ऑनलाइन बिक्री, डिलीवरी, परिवहन, डिजिटल अकाउंटिंग, वीडियो एडिटिंग और सोशल मीडिया प्रबंधन इसके विभिन्न उदाहरण हैं। NITI Aayog (2022) [10] ने भी गिग कार्य को पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी संबंध से बाहर आय अर्जित करने वाली गतिविधियों के रूप में परिभाषित करते हुए इसके बढ़ते विस्तार को रेखांकित किया है।

इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक समूह युवा हैं। युवा तकनीकी परिवर्तन को अपेक्षाकृत तेजी से अपनाते हैं और रोजगार के पारंपरिक विकल्पों के साथ-साथ डिजिटल तथा स्वतंत्र कार्यों की ओर भी आकर्षित होते हैं। Roshan, Makhija और Chauhan (2022) [11] के अध्ययन में भी गिग और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था को युवाओं के लिए अवसरों तथा चुनौतियों दोनों से जुड़ी उभरती रोजगार व्यवस्था के रूप में देखा गया है।

इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था का अध्ययन केवल यह जानने तक सीमित नहीं होना चाहिए कि इससे कितने रोजगार पैदा हो रहे हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह देखना भी आवश्यक है कि इससे युवाओं के कार्य के प्रति दृष्टिकोण, समय के उपयोग, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक संबंधों, लैंगिक भूमिकाओं, कौशल निर्माण और सामाजिक गतिशीलता में क्या परिवर्तन हो रहे हैं।

अम्बेडकरनगर के संदर्भ में यह विषय विशेष महत्व रखता है। जिले में कृषि तथा पारंपरिक पावरलूम गतिविधियों के साथ व्यापार, शिक्षा, छोटे उद्योग और सेवा क्षेत्र मौजूद हैं। टांडा का पावरलूम क्षेत्र और अकबरपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों का शिक्षित युवा वर्ग डिजिटल बाजार तथा सेवाओं से जुड़ने की संभावनाएँ रखता है। इस दृष्टि से

गिग अर्थव्यवस्था पारंपरिक स्थानीय अर्थव्यवस्था और उभरती डिजिटल अर्थव्यवस्था के बीच एक संभावित सेतु के रूप में देखी जा सकती है।

शोध समस्या एवं समस्या का कथन

गिग अर्थव्यवस्था को सामान्यतः रोजगार के नए अवसरों और कार्य में लचीलेपन के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है। किंतु समाजशास्त्रीय दृष्टि से प्रश्न यह है कि क्या यह लचीलापन वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान करता है या केवल रोजगार संबंधों को नए तरीके से संगठित करता है।

प्लेटफॉर्म श्रमिक को स्वतंत्र कार्यकर्ता या पार्टनर के रूप में प्रस्तुत कर सकता है, लेकिन कार्य का आवंटन, रेटिंग, भुगतान, ग्राहक प्रतिक्रिया और प्रदर्शन का मूल्यांकन डिजिटल प्रणाली द्वारा प्रभावित किया जा सकता है। इस स्थिति में श्रमिक के पास औपचारिक स्वतंत्रता तो होती है, किंतु उसके वास्तविक कार्य-निर्णयों पर प्लेटफॉर्म का प्रभाव बना रह सकता है। Wood *et al.* (2019) [18] ने इसी विरोधाभास को गिग श्रम में स्वायत्तता और एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण के सह-अस्तित्व के रूप में स्पष्ट किया है।

भारतीय संदर्भ में Nair (2023) [9] का अध्ययन यह दर्शाता है कि प्लेटफॉर्म श्रम में आर्थिक संबंध सामाजिक पदानुक्रमों तथा श्रम नियंत्रण से भी जुड़े होते हैं। उनके अध्ययन में दिल्ली-NCR के 23 गिग श्रमिकों के अनुभवों के आधार पर आय में कटौती, जोखिम तथा श्रम पर बढ़ते नियंत्रण की चर्चा की गई है।

अतः इस अध्ययन की मूल समस्या यह है कि गिग अर्थव्यवस्था युवाओं को रोजगार और सामाजिक गतिशीलता के अवसर उपलब्ध कराते हुए किस प्रकार नई प्रकार की श्रम-असुरक्षा, डिजिटल असमानता और नियंत्रण को जन्म देती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

भारत में गिग अर्थव्यवस्था का विस्तार इसे श्रम समाजशास्त्र के एक महत्वपूर्ण विषय में बदल रहा है। NITI Aayog (2022) [10] के अनुसार 2020–21 में भारत में लगभग 77 लाख गिग श्रमिक थे तथा 2029–30 तक यह संख्या लगभग 2.35 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया था। रिपोर्ट यह भी दर्शाती है कि गिग कार्य केवल निम्न-कौशल वाले कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न कौशल स्तरों में इसका विस्तार हो रहा है।

युवाओं के संदर्भ में इसका महत्व और अधिक है क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद नियमित रोजगार प्राप्त करने में लगने वाला समय, प्रतिस्पर्धा तथा बदलती श्रम मांग उन्हें वैकल्पिक आय-स्रोतों की ओर ले जा सकती है। गिग कार्य इस संक्रमणकाल में आय, अनुभव और कौशल प्राप्त करने का माध्यम बन सकता है।

दूसरी ओर, यदि गिग कार्य को सामाजिक सुरक्षा, आय की स्थिरता और श्रमिक अधिकारों से अलग करके देखा जाए तो यह असुरक्षित रोजगार के नए रूप को भी जन्म दे सकता है। अतः इसके अवसर और जोखिम दोनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।

गिग इकोनॉमी : अवधारणा एवं स्वरूप

'Gig' शब्द मूलतः संगीत और मनोरंजन क्षेत्र में सीमित अवधि के प्रदर्शन या कार्य के लिए प्रयुक्त होता था। आधुनिक अर्थव्यवस्था में इसका प्रयोग ऐसे कार्यों के लिए किया जाता है जिनमें व्यक्ति स्थायी रोजगार के बजाय अलग-अलग कार्यों, परियोजनाओं या सेवाओं के आधार पर आय अर्जित करता है।

गिग अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से दो प्रमुख रूपों में समझा जा सकता है। पहला, प्लेटफॉर्म-आधारित गिग कार्य, जिसमें डिजिटल ऐप या वेबसाइट श्रमिक और ग्राहक के बीच मध्यस्थ का कार्य करती है। परिवहन, भोजन-वितरण, घरेलू सेवाएँ और ऑन-डिमांड सेवाएँ इसके उदाहरण हैं। दूसरा, स्वतंत्र डिजिटल गिग कार्य, जिसमें व्यक्ति किसी ग्राहक अथवा संस्था को स्वतंत्र रूप से डिजिटल सेवा प्रदान करता है, जैसे ऑनलाइन ट्यूशन, ग्राफिक डिजाइन, कंटेंट लेखन, वीडियो एडिटिंग, अनुवाद, डिजिटल मार्केटिंग और सोशल मीडिया प्रबंधन।

यहाँ गिग अर्थव्यवस्था और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के बीच अंतर करना आवश्यक है। प्रत्येक प्लेटफॉर्म कार्य गिग अर्थव्यवस्था का हिस्सा हो सकता है, किंतु प्रत्येक गिग कार्य आवश्यक रूप से डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से नहीं होता। NITI Aayog (2022) [10] ने भी प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था को व्यापक गिग अर्थव्यवस्था के एक उपसमूह के रूप में समझाया है।

इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था को केवल डिलीवरी या परिवहन सेवाओं तक सीमित करना उचित नहीं होगा। डिजिटल तकनीक ने उच्च-कौशल वाले स्वतंत्र कार्यों के लिए भी नए अवसर उत्पन्न किए हैं।

भारत में गिग इकोनॉमी का विस्तार

भारत में सस्ती इंटरनेट सेवाओं, स्मार्टफोन, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने गिग अर्थव्यवस्था के विकास को गति दी है। NITI Aayog की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार 2020–21 में भारत में लगभग 77 लाख गिग श्रमिक थे। वे कुल कार्यबल का लगभग 1.5 प्रतिशत तथा गैर-कृषि कार्यबल का लगभग 2.6 प्रतिशत थे। रिपोर्ट ने 2029–30 तक इनके लगभग 2.35 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान लगाया था।

इस विस्तार की विशेषता यह है कि गिग कार्य विभिन्न कौशल स्तरों में दिखाई देता है। रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान गिग श्रम में मध्यम-कौशल वाले कार्यों की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है तथा भविष्य में उच्च एवं निम्न दोनों कौशल श्रेणियों में विस्तार की संभावना है (NITI Aayog, 2022) [10]।

Roshan, Makhija और Chauhan (2022) [11] ने भी भारतीय संदर्भ में गिग और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था को विविध कौशल वाले श्रमिकों के लिए अवसर प्रदान करने वाली व्यवस्था के रूप में देखा है। साथ ही उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों तथा सुरक्षा के लिए पर्याप्त संस्थागत व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया है।

इससे स्पष्ट होता है कि गिग अर्थव्यवस्था केवल निम्न-कौशल रोजगार का क्षेत्र नहीं है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ उच्च-कौशल वाले युवाओं के लिए भी स्वतंत्र और परियोजना-आधारित कार्य के अवसर बढ़ रहे हैं।

हालाँकि गिग श्रमिकों की वास्तविक संख्या का आकलन चुनौतीपूर्ण है। कई व्यक्ति एक से अधिक आय-स्रोतों से जुड़े हो सकते हैं और उनके कार्य का स्वरूप समय के साथ बदल सकता है। इसलिए जिला स्तर पर गिग श्रम की वास्तविक स्थिति समझने के लिए स्थानीय अध्ययन की आवश्यकता बनी रहती है।

अम्बेडकरनगर का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

अम्बेडकरनगर की सामाजिक-आर्थिक संरचना में कृषि, व्यापार, पावरलूम, छोटे उद्योग, सेवा गतिविधियाँ तथा धार्मिक-सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है। ऐसी मिश्रित अर्थव्यवस्था में डिजिटल तकनीक पारंपरिक आर्थिक गतिविधियों को नए बाजारों और उपभोक्ताओं से जोड़ने का माध्यम बन सकती है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रस्तुत अध्ययन अम्बेडकरनगर के गिग श्रमिकों पर प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण आधारित नहीं है। अतः स्थानीय उदाहरणों को संभावित सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं के विश्लेषणात्मक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि वास्तविक सर्वेक्षण निष्कर्ष के रूप में।

टांडा और अकबरपुर का पावरलूम और डिजिटल अर्थव्यवस्था

टांडा का पावरलूम क्षेत्र जिले की आर्थिक पहचान से जुड़ी महत्वपूर्ण गतिविधि है। पारंपरिक उत्पादन को डिजिटल बाजार से जोड़ने में स्थानीय युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। उत्पादों की डिजिटल फोटोग्राफी, ऑनलाइन कैटलॉग निर्माण, सोशल मीडिया प्रचार, ग्राहक संपर्क, डिजिटल भुगतान, पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स जैसी गतिविधियाँ उत्पादन और बाजार के बीच नए संबंध स्थापित कर सकती हैं। इस प्रक्रिया में पावरलूम परिवार का युवा केवल उत्पादन प्रक्रिया में श्रमिक की भूमिका तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि डिजिटल विपणन, ब्रांडिंग और ग्राहक प्रबंधन जैसे नए कार्यों में भी प्रवेश कर सकता है। इस प्रकार डिजिटल कौशल पारंपरिक आर्थिक पूँजी को नए बाजार मूल्य में बदलने का माध्यम बन सकता है।

कृषि और स्थानीय अर्थव्यवस्था

कृषि क्षेत्र भी डिजिटल सेवाओं से जुड़ सकता है। कृषि उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री, डिजिटल ग्राहक संपर्क, स्थानीय डिलीवरी, डिजिटल भुगतान तथा सोशल मीडिया आधारित विपणन में युवाओं के लिए सेवा-आधारित कार्य विकसित हो सकते हैं। यहाँ गिग अर्थव्यवस्था का महत्व केवल बाहरी कंपनियों के प्लेटफॉर्म से जुड़ने में नहीं, बल्कि स्थानीय उत्पादन और स्थानीय बाजार के डिजिटल पुनर्गठन में भी देखा जा सकता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

अम्बेडकरनगर के किछौछा शरीफ, गोविंद साहब, शिवबाबा तथा अन्य धार्मिक-सांस्कृतिक स्थलों से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों में डिजिटल संचार की संभावनाएँ मौजूद हैं। फोटोग्राफी, वीडियो निर्माण, सोशल मीडिया प्रबंधन, स्थानीय सूचना सेवाएँ, डिजिटल प्रचार और ऑनलाइन सामग्री निर्माण जैसे कार्य युवाओं के लिए आय के वैकल्पिक अवसर पैदा कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- गिग इकोनॉमी की समाजशास्त्रीय अवधारणा को स्पष्ट करना।
- युवाओं की बदलती कार्य-संस्कृति का विश्लेषण करना।
- भारत में गिग अर्थव्यवस्था के विस्तार को समझना।
- अम्बेडकरनगर के सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में गिग अर्थव्यवस्था की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- डिजिटल असमानता और गिग रोजगार के संबंध को समझना।
- गिग कार्य तथा सामाजिक गतिशीलता के संबंध का विश्लेषण करना।
- गिग कार्य से संबंधित सामाजिक प्रतिष्ठा और पारिवारिक प्रभावों को समझना।
- एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण और आधुनिक श्रम-अनुशासन का विश्लेषण करना।
- गिग श्रमिकों की श्रम-असुरक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा के प्रश्न का अध्ययन करना।
- स्थानीय अर्थव्यवस्था और डिजिटल उद्यमिता के बीच संभावित संबंधों की पहचान करना।

शोध प्रश्न

- गिग इकोनॉमी युवाओं की कार्य-संस्कृति को किस प्रकार बदल रही है*?*
- क्या गिग कार्य युवाओं के लिए सामाजिक गतिशीलता का माध्यम बन सकता है*?*
- डिजिटल असमानता गिग रोजगार के अवसरों को किस प्रकार प्रभावित करती है?
- गिग कार्य पारिवारिक संबंधों और लैंगिक भूमिकाओं को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है*?*
- क्या गिग अर्थव्यवस्था युवाओं को वास्तविक कार्य-स्वतंत्रता देती है अथवा नए प्रकार के श्रम नियंत्रण को जन्म देती है*?*
- अम्बेडकरनगर की स्थानीय अर्थव्यवस्था और डिजिटल उद्यमिता के बीच किस प्रकार संबंध विकसित हो सकता है*?*
- गिग कार्य में रोजगार के अवसर और श्रम-असुरक्षा किस प्रकार एक साथ मौजूद रहते हैं*?*

शोध-पद्धति

अध्ययन की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं वैचारिक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। इसमें गिग अर्थव्यवस्था, युवा कार्य-संस्कृति, डिजिटल श्रम, सामाजिक असमानता और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित उपलब्ध साहित्य तथा आधिकारिक दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है।

शोध प्रारूप

अध्ययन में गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया है। इसका उद्देश्य किसी एक प्लेटफॉर्म या श्रमिक समूह की सांख्यिकीय गणना करना नहीं, बल्कि गिग अर्थव्यवस्था के सामाजिक संबंधों और कार्य-संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों को समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के माध्यम से समझना है।

अध्ययन का क्षेत्र

अध्ययन का विशिष्ट संदर्भ अम्बेडकरनगर जिला, उत्तर प्रदेश है। जिले की कृषि, टांडा का पावरलूम, व्यापार, शिक्षा, सेवा तथा धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को डिजिटल अर्थव्यवस्था से संभावित रूप से जुड़ने वाले स्थानीय संदर्भों के रूप में लिया गया है।

डेटा के स्रोत

अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है—

- नीति आयोग की रिपोर्टें*;*
- भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के दस्तावेज*;*
- International Labour Organization की रिपोर्टें*;*
- गिग अर्थव्यवस्था पर प्रकाशित शोध-पत्र*;*
- श्रम का समाजशास्त्र तथा डिजिटल समाज से संबंधित पुस्तकें*;*
- भारतीय संदर्भ में प्रकाशित अकादमिक लेख*;*

साहित्य के चयन का आधार

ऐसे साहित्य को प्राथमिकता दी गई है जो गिग अर्थव्यवस्था, प्लेटफॉर्म श्रम, युवाओं, श्रम-असुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, डिजिटल असमानता तथा एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। NITI Aayog (2022) [10], Roshan *et al*. (2022) [11], Nair (2023) [9], De Stefano (2016) [5], Standing (2011) [16], Bourdieu (1986) [4] तथा Wood *et al*. (2019) [18] अध्ययन के प्रमुख संदर्भ हैं। श्रम का समाजशास्त्र तथा समकालीन गिग कार्य से संबंधित उपलब्ध सामग्री का भी उपयोग किया गया है। हाल के अध्ययन में Tomar (2026) [3] ने गिग श्रमिकों की आय, कार्य अवधि, रोजगार स्रोत, सामाजिक सुरक्षा तथा तकनीकी चुनौतियों को अध्ययन का विषय बनाया है।

विश्लेषण की प्रक्रिया

संग्रहित साहित्य का विषय-वस्तु आधारित विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के प्रमुख विषय हैं—रोजगार अवसर, कार्य-लचीलापन, डिजिटल कौशल, डिजिटल असमानता, एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक प्रतिष्ठा, लैंगिक प्रभाव, श्रम-असुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा।

इन विषयों को मार्क्स, वेबर, Standing और Bourdieu के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के साथ जोड़कर व्याख्यायित किया गया है।

साहित्य समीक्षा

गिग अर्थव्यवस्था पर उपलब्ध साहित्य को मुख्यतः चार प्रमुख आयामों में विभाजित किया जा सकता है—रोजगार के अवसर, श्रम-असुरक्षा, डिजिटल/एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण तथा सामाजिक असमानता।

NITI Aayog (2022) [10] की रिपोर्ट भारतीय गिग अर्थव्यवस्था के आकार और भविष्य की दिशा को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। रिपोर्ट ने 2020–21 में लगभग 77 लाख गिग श्रमिकों का अनुमान लगाया तथा भविष्य में इनके उल्लेखनीय विस्तार की संभावना व्यक्त की।

Roshan, Makhija और Chauhan (2022) [11] ने युवाओं के संदर्भ में गिग और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के अवसरों एवं चुनौतियों का अध्ययन किया। उनका अध्ययन यह दर्शाता है कि गिग अर्थव्यवस्था विविध कौशल वाले लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है, लेकिन श्रमिकों की सुरक्षा और समावेशी विकास के लिए संस्थागत समर्थन आवश्यक है।

De Stefano (2016) [5] ने 'Just-in-Time Workforce' की अवधारणा के माध्यम से ऑन-डिमांड श्रम की अस्थिरता को समझाया। उनके अनुसार डिजिटल प्लेटफॉर्म कार्य की मांग और उपलब्धता के बीच संबंध को नए तरीके से व्यवस्थित करते हैं।

Standing (2011) [16] की 'Precariat' अवधारणा अस्थिर आय, रोजगार की अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा के अभाव को समझने में विशेष रूप से उपयोगी है। गिग श्रमिकों का एक हिस्सा इसी प्रकार की असुरक्षित श्रम स्थिति का अनुभव कर सकता है।

Wood *et al.* (2019) [18] ने गिग श्रम में स्वायत्तता तथा एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण के बीच विरोधाभासी संबंध को रेखांकित किया। श्रमिक को समय और कार्य के स्तर पर कुछ स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है, किंतु प्लेटफॉर्म के एल्गोरिथ्म उसके प्रदर्शन और कार्य अवसरों को प्रभावित कर सकते हैं।

भारतीय संदर्भ में Nair (2023) [9] का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। उन्होंने दिल्ली-NCR के 23 गिग श्रमिकों तथा श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों के साक्षात्कार के आधार पर पूँजी-श्रम संबंध, सामाजिक पदानुक्रम और एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण का विश्लेषण किया। अध्ययन से पता चलता है कि महामारी के दौरान श्रमिकों की आय में कमी और श्रम पर नियंत्रण में वृद्धि एक साथ हुई।

श्रम समाजशास्त्र पर सिजना (2021) [1] का आलोचनात्मक विमर्श श्रम को व्यापक सामाजिक संबंधों और असमानताओं से जोड़कर समझने की आवश्यकता पर बल देता है। इसी क्रम में Tomar (2026) [3] का हालिया हिंदी अध्ययन गिग श्रमिकों की आय, कार्य अवधि, रोजगार स्रोत, सामाजिक सुरक्षा तथा तकनीकी चुनौतियों को रेखांकित करता है।

इस साहित्य से स्पष्ट है कि गिग अर्थव्यवस्था पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त विमर्श उपलब्ध है, लेकिन छोटे शहरों और जिलों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में युवा कार्य-संस्कृति, स्थानीय अर्थव्यवस्था, डिजिटल असमानता, सामाजिक गतिशीलता और डिजिटल उद्यमिता को एक साथ समझने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं।

शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से तीन प्रमुख शोध-अंतराल दिखाई देते हैं—

पहला, अधिकांश अध्ययन महानगरों या राष्ट्रीय स्तर पर गिग श्रम को समझते हैं। छोटे शहरों और जिलों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं।

दूसरा, गिग अर्थव्यवस्था पर रोजगार और श्रम-असुरक्षा से संबंधित अध्ययन पर्याप्त हैं, लेकिन युवा कार्य-संस्कृति, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक संबंध और सामाजिक गतिशीलता को एक साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता बनी हुई है।

तीसरा, स्थानीय अर्थव्यवस्था—जैसे कृषि, पावरलूम, छोटे व्यापार और धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों—को डिजिटल गिग कार्य तथा युवा उद्यमिता से जोड़कर देखने का प्रयास सीमित है।

इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन अम्बेडकरनगर को एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के रूप में ग्रहण करता है।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

कार्ल मार्क्स : श्रम एवं पूँजी संबंध

कार्ल मार्क्स के लिए पूँजीवादी उत्पादन संबंधों को समझने का केंद्रीय आधार श्रम, पूँजी और अतिरिक्त मूल्य का संबंध था (Marx, 1867/1976) [8]। गिग अर्थव्यवस्था में श्रमिक को प्रायः स्वतंत्र ठेकेदार या पार्टनर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। किंतु प्लेटफॉर्म भुगतान, कार्य आवंटन, रेटिंग और ग्राहक प्रतिक्रिया को प्रभावित कर सकता है।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि औपचारिक स्वतंत्रता क्या वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता में परिवर्तित होती है। यदि श्रमिक अपनी आय बनाए रखने के लिए अधिक घंटे कार्य करने के लिए बाध्य होता है, तो स्वतंत्रता का स्वरूप सीमित हो सकता है।

इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था पूँजी और श्रम के पारंपरिक संबंधों को समाप्त करने के बजाय उन्हें डिजिटल माध्यमों से पुनर्गठित कर सकती है।

मैक्स वेबर : तर्कसंगठन और नियंत्रण

वेबर ने आधुनिक समाज में rationalization अर्थात तर्कसंगठन को महत्वपूर्ण प्रक्रिया माना। आधुनिक संगठन में कार्य नियमों, गणना, दक्षता और औपचारिक प्रक्रियाओं के माध्यम से व्यवस्थित होता है (Weber, 1978) [17]।

गिग अर्थव्यवस्था में श्रम का संगठन डेटा, समय, लोकेशन, रेटिंग और एल्गोरिथ्म के माध्यम से होता है। पारंपरिक व्यवस्था में सुपरवाइजर जिस प्रकार श्रमिक की निगरानी करता था, उसी प्रकार डिजिटल प्लेटफॉर्म एल्गोरिथ्म के माध्यम से कार्य-प्रदर्शन का मूल्यांकन कर सकता है।

इस प्रकार एल्गोरिथ्मिक प्रबंधन आधुनिक तर्कसंगठन का नया रूप माना जा सकता है।

***गाइ स्टैंडिंग : प्रिकैरियट**

Standing (2011)*[16] ने 'Precariat' की अवधारणा के माध्यम से अस्थिर रोजगार, अनिश्चित आय, कमजोर सामाजिक सुरक्षा और भविष्य की असुरक्षा से जुड़ी सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया।

गिग श्रमिकों में ऐसी विशेषताएँ दिखाई दे सकती हैं। किंतु सभी गिग श्रमिक समान नहीं हैं। उच्च-कौशल वाला स्वतंत्र फ्रीलांसर, ऑनलाइन शिक्षक और कम आय वाला डिलीवरी श्रमिक अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों में कार्य करते हैं। इसलिए गिग अर्थव्यवस्था के भीतर वर्गीय, कौशलगत और लैंगिक विभाजन को भी समझना आवश्यक है।

पियरे बॉर्दियो : पूँजी और डिजिटल असमानता

Bourdieu (1986) [4] ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पूँजी के विभिन्न रूपों के माध्यम से सामाजिक असमानता को समझाया। डिजिटल युग में स्मार्टफोन, इंटरनेट, डिजिटल भाषा-दक्षता, सोशल नेटवर्क, ऑनलाइन प्रतिष्ठा और तकनीकी ज्ञान को डिजिटल पूँजी के रूप में देखा जा सकता है।

जिन युवाओं के पास अधिक डिजिटल पूँजी है वे डिजिटल बाजार में अधिक प्रभावी ढंग से प्रवेश कर सकते हैं। इसके विपरीत सीमित डिजिटल संसाधन वाले युवाओं के लिए गिग अर्थव्यवस्था के अवसर सीमित हो सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल पूँजी सामाजिक गतिशीलता का माध्यम होने के साथ-साथ असमानता का नया आधार भी बन सकती है।

युवाओं की बदलती कार्य-संस्कृति

गिग अर्थव्यवस्था युवाओं की कार्य-संस्कृति में परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम है। पारंपरिक रोजगार में एक संस्था, एक नियोक्ता, निश्चित कार्यस्थल और निर्धारित समय प्रमुख होते थे। डिजिटल गिग अर्थव्यवस्था में व्यक्ति अनेक ग्राहकों और आय-स्रोतों से जुड़ सकता है।

इस परिवर्तन से 'नौकरी' की पारंपरिक अवधारणा में भी बदलाव आता है। युवा अब केवल किसी संस्था में स्थायी नौकरी पाने के बजाय अपने कौशल को बाजार में बेचने योग्य सेवा के रूप में देख सकता है। उदाहरण के लिए स्नातक युवा ऑनलाइन ट्यूशन, कंटेंट निर्माण, डिजिटल मार्केटिंग, वीडियो एडिटिंग या डेटा संबंधी कार्य कर सकता है।

इस परिवर्तन से कार्य की पहचान भी बदल सकती है। पहले व्यक्ति स्वयं को शिक्षक, क्लर्क, कर्मचारी या दुकानदार के रूप में पहचानता था; अब कोई युवा स्वयं को फ्रीलांसर, डिजिटल क्रिएटर, ऑनलाइन शिक्षक या डिजिटल सेवा प्रदाता के रूप में भी पहचान सकता है।

यह बदलाव केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक भी है। इससे कार्य के समय, स्थान, सामाजिक प्रतिष्ठा और पेशागत पहचान के पारंपरिक मानदंडों में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है।

सामाजिक गतिशीलता और गिग कार्य

गिग कार्य सामाजिक गतिशीलता का संभावित माध्यम बन सकता है। यदि युवा गिग कार्य से प्राप्त आय को उच्च शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण, डिजिटल उपकरण या व्यवसाय में निवेश करता है तो उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है।

अम्बेडकरनगर के संदर्भ में पावरलूम से जुड़े युवाओं का उदाहरण महत्वपूर्ण है। यदि उत्पादन संबंधी पारंपरिक कौशल के साथ डिजिटल मार्केटिंग, ब्रांडिंग, ऑनलाइन बिक्री और ग्राहक प्रबंधन का कौशल जुड़ता है तो युवा केवल श्रम बेचने वाले व्यक्ति की भूमिका से आगे बढ़कर डिजिटल सेवा प्रदाता अथवा उद्यमी की भूमिका ग्रहण कर सकता है।

हालाँकि यह गतिशीलता सभी युवाओं के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होगी। डिजिटल उपकरणों की कीमत, इंटरनेट की गुणवत्ता, अंग्रेजी या अन्य डिजिटल भाषाओं का ज्ञान, सामाजिक नेटवर्क और आर्थिक संसाधन अवसरों में अंतर पैदा कर सकते हैं। इसलिए गिग अर्थव्यवस्था सामाजिक गतिशीलता का अवसर होने के साथ सामाजिक असमानता को पुनरुत्पादित भी कर सकती है।

सामाजिक प्रतिष्ठा और गिग कार्य

भारतीय समाज में विशेषकर छोटे शहरों और कस्बों में सरकारी तथा नियमित नौकरी को स्थायित्व, सम्मान और सामाजिक सुरक्षा से जोड़ा जाता रहा है। इसलिए गिग कार्य करने वाला युवा आर्थिक रूप से सक्रिय होने के बावजूद सामाजिक रूप से 'स्थापित' न माना जा सकता है।

यह स्थिति युवाओं की पेशागत आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती है। एक युवा नियमित सरकारी नौकरी की तैयारी करते हुए गिग कार्य को अस्थायी आय के रूप में अपना सकता है। दूसरे शब्दों में गिग कार्य उसके लिए अंतिम पेशागत पहचान न होकर संक्रमणकालीन रोजगार हो सकता है।

लेकिन डिजिटल उद्यमिता के विस्तार के साथ पेशागत प्रतिष्ठा के पुराने मानदंड बदल सकते हैं। सफल फ्रीलांसिंग, डिजिटल व्यवसाय, ऑनलाइन शिक्षा और सोशल मीडिया आधारित व्यवसाय भविष्य में सामाजिक पहचान और प्रतिष्ठा के नए स्रोत बन सकते हैं।

परिवार, समय और कार्य-संस्कृति

गिग कार्य की सबसे अधिक चर्चित विशेषताओं में कार्य-समय का लचीलापन है। युवा अपनी सुविधा के अनुसार कार्य करने का प्रयास कर सकता है। इससे शिक्षा, पारिवारिक जिम्मेदारियों और आय के बीच संतुलन की संभावना उत्पन्न होती है।

लेकिन यही लचीलापन दूसरी स्थिति में श्रम की अवधि बढ़ाने का माध्यम भी बन सकता है। यदि आय ऑर्डर, ग्राहक रेटिंग या प्लेटफॉर्म प्रोत्साहन पर निर्भर है तो श्रमिक अधिक समय तक ऑनलाइन रहने के लिए प्रेरित हो सकता है।

इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था में 'लचीलापन' और 'असुरक्षा' एक-दूसरे के विपरीत नहीं बल्कि कई बार साथ-साथ मौजूद रहते हैं।

लैंगिक प्रभाव

गिग अर्थव्यवस्था महिलाओं के लिए कुछ नए रोजगार अवसर उत्पन्न कर सकती है। ऑनलाइन ट्यूशन, कंटेंट निर्माण, डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग और ऑनलाइन बिक्री जैसे कार्य घर से आय अर्जित करने की संभावनाएँ प्रदान कर सकते हैं।

लेकिन केवल घर से काम करने की सुविधा को महिला सशक्तीकरण नहीं माना जा सकता। यदि घरेलू श्रम का बोझ महिलाओं पर पहले की तरह बना रहता है तो डिजिटल रोजगार उनके लिए दोहरे कार्यभार का कारण बन सकता है।

इसलिए महिला गिग श्रम का मूल्यांकन केवल रोजगार में भागीदारी के आधार पर नहीं, बल्कि आय पर नियंत्रण, निर्णय लेने की क्षमता, समय पर अधिकार और आर्थिक स्वायत्तता के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

डिजिटल असमानता

डिजिटल अर्थव्यवस्था में अवसर सभी युवाओं के लिए समान नहीं हैं। स्मार्टफोन का होना मात्र डिजिटल सशक्तीकरण का पर्याप्त प्रमाण नहीं है। इंटरनेट की गुणवत्ता, डिजिटल भुगतान का ज्ञान, साइबर सुरक्षा, भाषा दक्षता, ऑनलाइन बाजार की समझ तथा सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग की क्षमता भी आवश्यक है।

इस प्रकार डिजिटल असमानता को केवल 'तकनीक तक पहुँच' की समस्या नहीं माना जा सकता। यह शिक्षा, कौशल, रोजगार, आय और सामाजिक गतिशीलता से जुड़ी हुई बहुआयामी असमानता है।

Bourdieu की पूँजी अवधारणा के आधार पर देखा जाए तो डिजिटल संसाधन और डिजिटल कौशल ऐसी पूँजी बन सकते हैं जो युवाओं की बाजार में स्थिति को प्रभावित करते हैं (Bourdieu, 1986) [4]।

अम्बेडकरनगर जैसे जिले में ग्रामीण और अर्ध-शहरी युवाओं के बीच डिजिटल संसाधनों और कौशल में अंतर गिग रोजगार के अवसरों में भी अंतर पैदा कर सकता है।

एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण और डिजिटल श्रम-अनुशासन

गिग अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता एल्गोरिथ्मिक प्रबंधन है। प्लेटफॉर्म यह निर्धारित कर सकता है कि किस श्रमिक को कौन-सा कार्य मिले, ग्राहक की रेटिंग का क्या प्रभाव हो और कार्य कितने समय में पूरा किया जाए।

यह नियंत्रण पारंपरिक औद्योगिक व्यवस्था के नियंत्रण से भिन्न है। यहाँ मानव सुपरवाइजर की प्रत्यक्ष उपस्थिति के स्थान पर डिजिटल प्रणाली कार्य करती है।

Wood *et al*. (2019) [18] ने गिग श्रम में स्वायत्तता और एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण के इस विरोधाभास को महत्वपूर्ण माना है। श्रमिक कार्यस्थल और समय के स्तर पर अपेक्षाकृत स्वतंत्र दिखाई दे सकता है, किंतु प्लेटफॉर्म का एल्गोरिथ्म उसके कार्य अवसरों और प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

Nair (2023) [9] के भारतीय अध्ययन से भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल नियंत्रण केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सामाजिक पदानुक्रम और श्रम संबंधों से जुड़ा हुआ है।

इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता और नियंत्रण दोनों को एक साथ प्रस्तुत करती है।

सामाजिक सुरक्षा और श्रम-असुरक्षा

गिग अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में सामाजिक सुरक्षा शामिल है। बीमारी, दुर्घटना, मातृत्व, वृद्धावस्था अथवा अचानक आय बंद होने की स्थिति में श्रमिक और उसका परिवार आर्थिक संकट का सामना कर सकता है।

भारत के Code on Social Security, 2020 [19] में गिग तथा प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कानूनी रूप से मान्यता देते हुए उनके लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से संबंधित प्रावधान शामिल किए गए हैं। यह भारतीय श्रम नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

लेकिन कानून में प्रावधान होना और वास्तविक सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच होना अलग-अलग प्रश्न हैं। पंजीकरण, जानकारी, पात्रता, प्रशासनिक पहुँच और योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सामाजिक सुरक्षा की वास्तविक उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं।

भारतीय संदर्भ में गिग श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा और श्रम-असुरक्षा पर उपलब्ध साहित्य भी यही संकेत देता है कि रोजगार का विस्तार अपने आप में सुरक्षित रोजगार सुनिश्चित नहीं करता (NITI Aayog, 2022; Nair, 2023) [10, 9]।

अम्बेडकरनगर के विशेष संदर्भ में समाजशास्त्रीय विश्लेषण

अम्बेडकरनगर में गिग अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को केवल बाहरी डिजिटल प्लेटफॉर्मों से जोड़कर देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसकी वास्तविक समाजशास्त्रीय संभावना स्थानीय अर्थव्यवस्था और डिजिटल कौशल के बीच संबंध विकसित करने में निहित है।

टांडा का पावरलूम इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। यदि स्थानीय युवा उत्पादों की फोटोग्राफी, डिजिटल कैटलॉग, सोशल मीडिया प्रचार, ऑनलाइन ग्राहक संपर्क, पैकेजिंग और डिजिटल भुगतान जैसी सेवाएँ प्रदान करते हैं तो पारंपरिक उत्पादन प्रणाली नए बाजारों से जुड़ सकती है।

इसी प्रकार कृषि उत्पादों के लिए डिजिटल विपणन, स्थानीय डिलीवरी और ग्राहक नेटवर्क विकसित किए जा सकते हैं। इससे कृषि और डिजिटल सेवा क्षेत्र के बीच नया रोजगार संबंध बन सकता है।

शिक्षित युवा ऑनलाइन ट्यूशन, वीडियो एडिटिंग, कंटेंट लेखन, डिजिटल अकाउंटिंग, वेबसाइट प्रबंधन और सोशल मीडिया प्रबंधन जैसे उच्च-कौशल वाले कार्यों में प्रवेश कर सकते हैं। इससे गिग अर्थव्यवस्था केवल शारीरिक श्रम आधारित कार्यों तक सीमित न रहकर ज्ञान और कौशल आधारित अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन सकती है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के संदर्भ में डिजिटल प्रचार, फोटोग्राफी, वीडियो निर्माण और स्थानीय सूचना सेवाएँ भी रोजगार के संभावित क्षेत्र हो सकते हैं।

इस प्रकार अम्बेडकरनगर में गिग अर्थव्यवस्था को स्थानीय आर्थिक संरचना के डिजिटल पुनर्संगठन के संदर्भ में समझा जा सकता है।

चर्चा

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गिग अर्थव्यवस्था को न तो केवल रोजगार की नई संभावना के रूप में देखा जा सकता है और न ही केवल श्रम-असुरक्षा के रूप में। यह दोनों प्रक्रियाओं को एक साथ समाहित करती है।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण से गिग अर्थव्यवस्था पूँजी और श्रम के संबंधों को समाप्त करने के बजाय उन्हें डिजिटल माध्यम से पुनर्गठित करती दिखाई देती है। प्लेटफॉर्म श्रमिक और ग्राहक के बीच मध्यस्थ होते हुए भी श्रम की शर्तों को प्रभावित कर सकता है।

वेबर के दृष्टिकोण से एल्गोरिथ्मिक प्रबंधन आधुनिक तर्कसंगठन का नया रूप है। कार्य को डेटा, समय, प्रदर्शन और रेटिंग के माध्यम से मापना श्रम को अधिक गणनात्मक बनाता है।

Standing का 'प्रिकैरियट' दृष्टिकोण आय-अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा की कमी को समझने में उपयोगी है। वहीं Bourdieu का दृष्टिकोण यह बताता है कि डिजिटल संसाधनों और कौशल का असमान वितरण गिग अर्थव्यवस्था में भी वर्गीय तथा सामाजिक असमानताओं को पुनरुत्पादित कर सकता है।

इसलिए गिग अर्थव्यवस्था का समाजशास्त्रीय अध्ययन एक द्वंद्वात्मक स्थिति प्रस्तुत करता है—स्वतंत्रता और नियंत्रण, अवसर और असुरक्षा, डिजिटल समावेशन और डिजिटल असमानता, तथा सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक पुनरुत्पादन।

अम्बेडकरनगर जैसे जिले के संदर्भ में यह द्वंद्व विशेष महत्व रखता है। यहाँ डिजिटल अर्थव्यवस्था पारंपरिक स्थानीय अर्थव्यवस्था को नए बाजारों से जोड़ सकती है, लेकिन इसके लाभ तभी व्यापक होंगे जब डिजिटल कौशल और संसाधनों तक पहुँच सामाजिक रूप से व्यापक हो।

निष्कर्ष

गिग इकोनॉमी आधुनिक श्रम व्यवस्था में हो रहे व्यापक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। यह रोजगार को स्थायी नौकरी की पारंपरिक संरचना से निकालकर कार्य, परियोजना, सेवा और डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित स्वरूपों से जोड़ती है। भारत में इसके तेजी से विस्तार और भविष्य में इसके और बढ़ने की संभावना ने इसे श्रम समाजशास्त्र तथा युवा अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय बना दिया है। NITI Aayog ने 2020–21 में लगभग 77 लाख गिग श्रमिकों का अनुमान लगाया था तथा 2029–30 तक लगभग 2.35 करोड़ तक विस्तार की संभावना व्यक्त की थी।

युवाओं के लिए गिग अर्थव्यवस्था लचीलापन, अतिरिक्त आय, कौशल विकास, स्वतंत्र कार्य और डिजिटल उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराती है। विशेष रूप से अम्बेडकरनगर जैसे जिले में यह पारंपरिक आर्थिक गतिविधियों को डिजिटल बाजार से जोड़ने का माध्यम बन सकती है। टांडा का पावरलूम, कृषि, स्थानीय व्यापार तथा धार्मिक-सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था इसके महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकते हैं।

लेकिन गिग अर्थव्यवस्था को केवल रोजगार के अवसर के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। आय की अनिश्चितता, डिजिटल असमानता, एल्गोरिथ्मिक नियंत्रण, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, लैंगिक असमानता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े प्रश्न इसके साथ जुड़े हुए हैं। भारतीय अध्ययन भी यह संकेत देते हैं कि प्लेटफॉर्म श्रम में आर्थिक अवसर और श्रम नियंत्रण साथ-साथ मौजूद हो सकते हैं (Nair, 2023) [9]।

मार्क्स के दृष्टिकोण से यह श्रम और पूँजी के नए संबंधों का प्रश्न है; वेबर के दृष्टिकोण से डिजिटल तर्कसंगठन और नियंत्रण का प्रश्न है; Standing के संदर्भ में यह श्रम-असुरक्षा और प्रिकैरियट का प्रश्न है तथा Bourdieu के संदर्भ में यह डिजिटल पूँजी और सामाजिक असमानता का प्रश्न है।

इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि गिग अर्थव्यवस्था युवाओं को केवल नया काम नहीं देती, बल्कि कार्य की सामाजिक परिभाषा, पेशागत पहचान, समय के उपयोग, कौशल और सामाजिक गतिशीलता के स्वरूप को भी बदल सकती है। लेकिन इस परिवर्तन का लाभ समान रूप से वितरित नहीं होता। डिजिटल पूँजी, शिक्षा, आर्थिक संसाधन, सामाजिक नेटवर्क और तकनीकी दक्षता युवाओं के अवसरों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करते हैं।

अतः अम्बेडकरनगर में गिग अर्थव्यवस्था को स्थानीय विकास और सामाजिक गतिशीलता की दृष्टि से समझने के लिए आवश्यक है कि पारंपरिक स्थानीय अर्थव्यवस्था और डिजिटल बाजार के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाए। साथ ही भविष्य में जिला-स्तरीय क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से गिग श्रमिकों की संख्या, आय, कार्य-घंटे, शिक्षा, कौशल, लैंगिक स्थिति और सामाजिक सुरक्षा की वास्तविक स्थिति का अनुभवजन्य अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

अंततः इस अध्ययन का केंद्रीय समाजशास्त्रीय प्रश्न यही है—

"डिजिटल अर्थव्यवस्था युवाओं को केवल नया काम दे रही है या उनके सामाजिक और आर्थिक भविष्य को भी नए रूप में निर्मित कर रही है?"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिजना ज्योति. "श्रम का समाजशास्त्र : एक आलोचनात्मक विमर्श." Rajasthan Journal of Sociology, 2021, 13.
2. वैद्य मनीष एवं अमृता बीजू. "गिग क्या है, क्यों हर दूसरा युवा इसी दौड़ में है?" Observer Research Foundation (ORF), Hindi, 2025.
3. तोमर सुरेश. "गिग कार्यबल का स्वरूप, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनायें." International Journal for Multidisciplinary Research, 2026, 8(4). DOI: 10.36948/ijfmr.2026.v08i04.86356.
4. Bourdieu P. The forms of capital. In: Richardson JG, editor. Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education. Greenwood, 1986.
5. De Stefano V. The rise of the 'just-in-time workforce': on-demand work, crowdwork, and labor protection in the gig-economy. Comparative Labor Law & Policy Journal. 2016;37(3):471-504.
6. Graham M, Hjorth I, Lehdonvirta V. Digital labour and development. Transfer. 2017;23(2):135-162.
7. International Labour Organization. World Employment and Social Outlook 2021: The Role of Digital Labour Platforms in Transforming the World of Work. ILO, 2021.
8. Marx K. Capital: A Critique of Political Economy, Vol. I. Penguin, 1976.
9. Nair G. The political economy of gig work in the pandemic: social hierarchies and labour control of Indian platform workers. Journal of South Asian Development. 2023;18(3):409-430.
10. NITI Aayog. India's Booming Gig and Platform Economy: Perspectives and Recommendations on the Future of Work. Government of India, 2022.
11. Roshan A, Makhija M, Chauhan N. Role of gig and platform economy in 21st century's blooming India: an empirical study on opportunities and challenges for youth. Pranjana: The Journal of Management Awareness. 2022;25(1-2):77-91.
12. Rosenblat A. Uberland: How Algorithms Are Rewriting the Rules of Work. University of California Press, 2018.
13. Rosenblat A, Stark L. Algorithmic labor and information asymmetries: a case study of Uber's drivers. International Journal of Communication. 2016;10:3758-3784.
14. Scholz T. Uberworked and Underpaid: How Workers Are Disrupting the Digital Economy. Polity, 2016.
15. Srnicek N. Platform Capitalism. Polity, 2017.
16. Standing G. The Precariat: The New Dangerous Class. Bloomsbury Academic, 2011.
17. Weber M. Economy and Society. University of California Press, 1978.
18. Wood AJ, Graham M, Lehdonvirta V, Hjorth I. Good gig, bad gig: autonomy and algorithmic control in the global gig economy. Work, Employment and Society. 2019;33(1):56-75.
19. Ministry of Labour and Employment, Government of India. The Code on Social Security, 2020. Government of India, 2020.